शोध प्रतिवेदन

"टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का विद्यार्थियों के मूल्यों पर पड़ने पाले प्रभावों का अध्ययन"

निर्देशक
श्री मनीष सैनी
(व्याख्याता)

प्रस्तुतकर्त्री
राजेश्वरी शर्मा
(एम.एड. छात्रा)

बियानी गर्ल्स बी.एड़ कॉलेज, जयपुर(राजस्थान)
(सत्र 2015-17)

प्रस्तावना

व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग है। प्रत्येक व्यक्ति में अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने की इच्छाएँ होती हैं, जिन्हें व्यक्ति समाज में रहकर पूर्ण करना चाहता है। मनुष्य समाज में रहने के लिए कुछ नियम व आदर्शों का निर्माण करता है। ये नियम व आदर्श समाज की संस्कृति से जुड़े होते हैं। सामाजिक व्यवस्था को सुचारू रूप से एवं व्यवस्थित तरीके से चलाने के लिए हमें उच्च स्तरीय मानदण्ड़ों की आवश्यकता होती है। जो इन सारे मानदण्ड़ों पर खरे उतरते हैं उन्हें मूल्य कहा जाता है।

मूल्य आकांक्षा से जुड़े होते हैं। समाज की जैसी आकांक्षाएँ होती हैं मनुष्य उसी दिशा में कार्य करने लगता है। अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करता है। ये आकांक्षाएँ ही मूल्य रूप में अभिव्यक्त होती है।भारतीय धर्म ग्रन्थों में तो मूल्यों की विस्तार से चर्चा की गई है एवं सर्वाधिक नैतिक मूल्यों को महत्व दिया गया है क्योंकि यदि व्यक्ति में नैतिक मूल्य होंगे तो अन्य मूल्य जैसे– धार्मिक, सामाजिक,

राजनैतिक आदि स्वतः ही आ जायेंगे।इस प्रकार मूल्य वे हैं, जो मानव को नैतिक व अनैतिकता का पाठ पढ़ाते हैं तथा उसे सत्य मार्ग पर चलने को प्रेरित करते हैं।

टेलीविजन द्वारा पूरे विश्व में अपनाये जाने वाले शैक्षिक कार्यक्रम तथा विभिन्न देशों की शिक्षा पद्धति आदि के विषय में जानकारी सरलता से प्राप्त हो जाती है। टेलीविजन पर मनोरंजन, खेलकूद तथा अन्य सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रसारण छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व के विकास तथा अभिवृत्ति के निर्माण में सहायक होता है। टेलीविजन के माध्यम से स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस, विभिन्न महापुरूषों के जन्म–दिन, महत्वपूर्ण पर्व और त्यौहारों से सम्बन्धित प्रसारण द्वारा छात्रों में राष्ट्रीय एकता, देश–प्रेम तथा प्यार एवं त्याग की भावना का विकासकिया जा सकता है। टेलीविजन की सहायता से राजनैतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक तथा नैतिक घटनाओं की विस्तृत जानकारी प्रदान की जा सकती है।

समस्या का औचित्य

प्रत्येक अनुसंधान कार्य के करने से पूर्व एक समस्या का चयन आवश्यक होता है वो समस्या किसी व्यक्ति अथवा समूह से संबंधित होती है। जब अनुसंधानकर्ता उस समस्या का चयन करता है तो उसके कोई उद्देश्य अथवा लक्ष्य होते है। उस समस्या को चुनने का कोई न कोई औचित्य अवश्य होता हैं। जिस किसी समस्या को अनुसंधानकर्ता चुनता है वह शैक्षिक, सामाजिक जागरुकता व वर्तमान समस्या पर आधारित होनी चाहिए। चयनित समस्या शैक्षिक व दैनिक व्यवहार में उपयोगी हो।

आज के समय में एकल परिवार, कामकाजी माता–पिता व अन्य कारणों से बच्चे टी.वी. से अधिक जुड़ रहे हैं। वे अपना अधिकांश समय टी.वी. के सामने बिता रहे हैं। जिसका प्रभाव उनके आदर्शों, मूल्यों, व्यवहारों, आचार–विचार आदि पर पड़ रहा है अर्थात् सम्पूर्ण व्यक्तित्व इससे प्रभावित हो रहा है। बच्चों में अनुकरण की प्रवृत्ति अधिक होती है। बच्चे टी.वी. पर प्रसारित कार्यक्रम की अच्छे व बुरे दोनों प्रभावों को आत्मसात् कर लेते हैं। इस अनुकरण की प्रवृत्ति से बच्चों के नैतिक मूल्यों पर प्रभाव पड़ता है। जैसे– वर्तमान समय में कलर्स पर दिखाए जा रहे नाटक –ससुराल सिमर का' में डायन, भूत–प्रेत के विषय में, जादू टोना आदि को

दिखाया जा रहा है, जिससे बालकों में अंध विश्वास को बढ़ावा मिल रहा है। इसके अलावा कई टी.वी. एड भी इस तरह की हैं जो विद्यार्थियों को दिग्भ्रमित कर रही हैं। अतः विद्यार्थियों के मूल्यों पर प्रभाव पड़ रहा है जिससे वे अय्याशी, आक्रामक, आराम पसन्द, बड़ों का अनादर आदि अनैतिक कार्य कर रहे हैं। आज के दौर में देखा जाए तो बालकों को मूल्य की शिक्षा मिलना दूर्भर हो गया है। टेलविजन पर प्रसारित कार्यक्रमों से ही उनके जीवन मूल्य बन रहे है। क्या इस चैनल पर सभी कार्यक्रम मूल्यवर्धन स्वरूप में प्रसारित किए जाते हैं? क्या टेलीविजन का माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी पर सकरात्मक प्रभाव पड़ता है? क्या विद्यार्थियों के व्यवहार व जीवन मूल्य इससे प्रभावित होते हैं?

अतः शोधार्थी ने यह जानने के लिए कि क्या टी.वी. पर प्रसारित कार्यक्रम से विद्यार्थियों के मूल्यों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है तथा टी.वी. पर प्रसारित धार्मिक कार्यक्रमों को विद्यार्थी देखते हैं एवं वर्तमान समय में विद्यार्थियों के अनैतिक कार्यों में हिस्सेदारी, टी.वी. कार्यक्रमों के प्रभाव से है।

उपरोक्त सभी कारणों से प्रेरित होकर शोधकर्त्री ने अपने शोध अध्ययन के लिए इस विषय का चयन किया है जिससे कि वह टेलीविजन पर प्रसारित कार्यक्रम द्वारा विद्यार्थियों के मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन कर सके।

इस समस्या से सम्बन्धित कतिपय प्रश्न शोधकर्त्री के मस्तिष्क में उत्पन्न हुए हैं जो निम्न प्रकार से हैं –

1. क्या विद्यार्थियों के मूल्यों पर टेलीविजन कार्यक्रम का प्रभाव पडता है ?
2. क्या टेलीविजन पर प्रसारित कार्यक्रमों से माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के नैतिकता पर प्रभाव पडता है।
3. क्या टेलीविजन पर प्रसारित कार्यक्रमों से माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की सामाजिकता प्रभावित होती है ?
4. क्या टेलीविजन पर प्रसारित कार्यक्रमों से माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के धार्मिक मूल्य प्रभावित होते है।

समस्या कथन

''टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का विद्यार्थियों के मूल्यों पर पड़ने पाले प्रभावों का अध्ययन''

अध्ययन में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की व्याख्या –

1. टेलीविजन –

टेलीविजन का शाब्दिक अर्थ है – ''दूर से देखना''। इसमें टेली का अर्थ है 'दूर' और विजन का अर्थ है 'दृश्य' अर्थात् दूर के दृश्यों को प्रत्यक्ष सामने देखना।

टेलीविजन दर्शकों के मध्य सही घटना, दृश्य एवं विवरण को यथावत् रखने में सफल है। सर्वप्रथम सन् 1936 में बी.पी. लन्दन के द्वारा इसका प्रादुर्भाव किया गया। शिक्षा जगत में इसका प्रयोग सर्वप्रथम 1958 में अमेरिका में विज्ञान विषय पढ़ाने के उद्देश्य से किया गया। टेलीविजन की स्थिति बिल्कूल वैसी ही है जैसे पूछा जाए कि कुआँ लाभदायक है या हानिकारक कुआँ मनुष्य की पानी की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए खोदा जाता है परन्तु अगर कोई उसमें गिर जाए तो कुआँ क्या कर सकता है। इसी तरह टेलीविजन मनुष्य को लाभ देने के लिए बना है परन्तु यदि कोई उसमें सारा समय लगा रहे या उससे नकारात्मक व गलत बातें सीखकर अपना जीवन नष्ट कर ले तो टेलीविजन उसमें क्या कर सकता है।

2. माध्यमिक स्तर

माध्यमिक स्तर के विद्यालय शैक्षिक संरचना की मध्यस्थ कड़ी है। इससे पहले प्राथमिक विद्यालय तथा बाद में उक्त विद्यालय के रूप में विश्व विद्यालय स्तर आते है। माध्यमिक स्तर पर सामान्य रूप से 14 से 18 वर्ष के मध्य के विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते है। इसके अन्दर कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा आती है। उत्तर प्रदेश मा. शिक्षा एवं उच्चतर प्राथमिक शिक्षा परिषद, इलाहबाद द्वारा इस स्तर पर शिक्षा में हायर सैकण्डरी स्कूल के अन्तर्गत 9–11 तक की कक्षाएं भी संचालित की जा रही है। लेकिन केन्द्रीय स्तर पर केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.सी.) द्वारा नवोदय विद्यालय, सैन्ट्रल स्कूल तथा पब्लिक विद्यालयों की शिक्षा भी इसके अन्तर्गत आती है।

कार्टर वी. गुड के अनुसार – ''माध्यमिक स्तर शिक्षा का का वह समय है जो सामान्यतः 12 से 17 वर्ष की उम्र के बालक बालिकाओ के लिए होती है। इस काल में अध्ययन के प्रमुख उपकरणों का प्रयोग स्वामित्व, अभिव्यक्ति, वैचारिक स्वतंत्रता, विविध जानकारी प्राप्त करने, बौद्धिक कुशलता, अभिरूचि और आदर्शों

तथा आदतों के निर्माण पर बल दिया जाता है। भारतवर्ष के सन्दर्भ में माध्यमिक शिक्षा का काल 14 से 18 वर्ष की आयु का माना जाता है।''[1]

3. मूल्य –

शाब्दिक रूप से देखा जाये तो मूल्य को अंग्रेजी में "Value" कहते हैं। यह लैटिन भाषा के "Valur" से बना है जिसका आंग्ल भाषा में अर्थ ability, utility, importance है अर्थात् योग्यता, उपयोगिता व महत्व है।

''मूल्य सामाजिक रूप से स्वीकृत इच्छाएँ हैं।''

– प्रो० राधाकमल मुखर्जी[1]

मूल्य एक विश्वास, आस्था का अनुभव है जिस पर व्यक्ति अभिमानित होता है जो विकल्पों में से बिना किसी प्रोत्साहन या धार्मिक विश्वास से चुनी होती है। अनुभवों के सामान्य सिद्धान्तों को जो समस्त जीवन जीने की विशिष्टता को जन्म देते हैं तथा उनके पथ प्रदर्शक के रूप में कार्य करते हैं, मूल्य कहलाते हैं।

''मूल्य शब्द रूचि, आनन्द, पसन्द, प्राथमिक कर्त्तव्य, नैतिक आदर्श, इच्छाएँ, आवश्यकताएँ और भविष्य में अनिच्छा तथा चुनने योग्य आदर्श मान्यताएँ होती हैं।''

–इंटरनेशनल एनसाइक्लोपीडिया[2]

शोध के उद्देश्य

अतः शोध कार्य की सफलता हेतु शोधकर्त्री द्वारा निम्न उद्देश्यो का निर्धारण किया गया–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों पर टेलीविजन के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर नैतिकता से जुडे कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों पर धार्मिक कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

---

[1] मुखर्जी, राधाकमल (1988) : मूल्य परख शिक्षा वर्ग, पृ.सं. 12–16
[2] एबिल, आर. एल. (1967) : एनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजुकेशन रिसर्च पृ.सं. 270

5. माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय मे अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों पर टेलीविजन के प्रभाव का अध्ययन करना।
6. माध्यमिक स्तर के गैर सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों पर टेलीविजन के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

उपर्युक्त बातो को ध्यान में रखकर प्रस्तुत शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित कि गई है–

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यों पर टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का प्रभाव पडता है।
2. माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर नैतिकता से जुडें टेलीविजन कार्यक्रमों का प्रभाव नहीं पड़ता।
3. माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों पर सामाजिकता से जुडे टेलीविजन कार्यक्रमों का प्रभाव नहीं पड़ता।
4. माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों पर धार्मिक टेलीविजन कार्यक्रमो का प्रभाव नही पड़ता।
5. माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयो के विद्यार्थियों के मूल्यों पर टेलीविजन कार्यक्रमों का प्रभाव नहीं पडता है।
6. माध्यमिक स्तर के गैर सरकारी विद्यालयो के अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों पर टेलीविजन कार्यक्रमों का प्रभाव नहीं पड़ता।

अध्ययन में प्रयुक्त विधि

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति एवं प्रस्तावित उद्देश्यों को देखते हुये इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग प्रदत्त संकलन हेतु किया गया है।

अध्ययन के चर

जिस गुण विशेषता या अवस्था का अध्ययन करना हमारा उद्देश्य है उसे चर कहते है। इन्हे व्यवहारिक रूप मे प्रस्तुत किया जाता है।

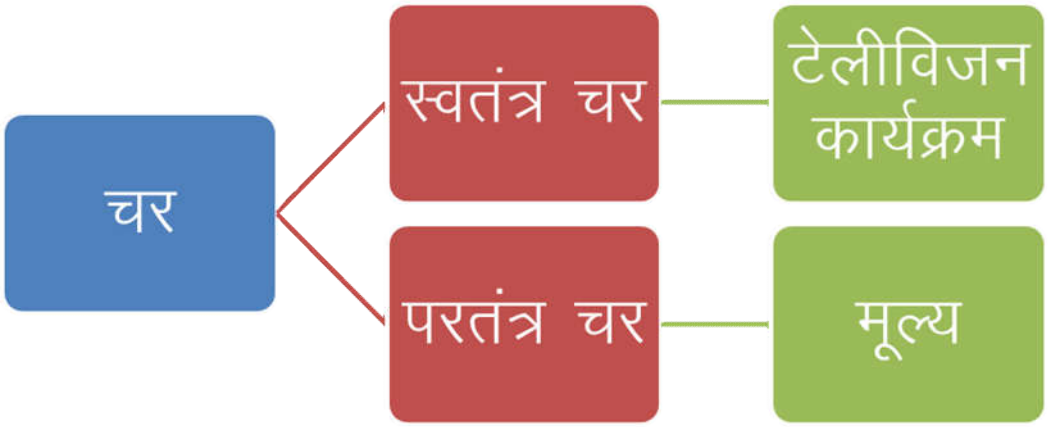

प्रदत्तो के स्त्रोत

प्रदत्त संकलन के समस्त स्त्रोतो को दो वर्गो में विभक्त किया गया है –

1. **प्राथमिक स्त्रोत–** ये वे स्त्रोत है जिनका प्रयोग उस शोध कर्ता द्वारा ही प्रथम बार किया जा रहा है जिनका संकलन स्वयं उसने किया है । प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक स्त्रोत जयपुर शहर के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी है।
2. **द्वितीयक स्त्रोत–** ये वे स्त्रोत है जो शोधकर्त्ता को ऐसे प्रदत्त प्रदान करते है जिनका संकलन पूर्व मे ही किन्ही अन्य संकलनकर्त्ता ने किया तथा उन्हे अपने कार्य मे लिया हो । इस अध्ययन में पुस्तक, पत्र–पत्रिका ,अन्यशोध ग्रन्थ, इन्टरनेट आदि है।

जनसंख्या

यह समस्त समूह जिसमें प्रतिदर्श का चयन किया जाता है, जनसंख्या कहलाता है।

पी. वी. यंग

प्रस्तुत शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में जयपुर शहर के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी लिए गये है।

न्यादर्श

शोध कार्य के लिए प्रत्येक जनसंख्या से प्रदत्त एकत्रित करना कठिन कार्य होता है। इसके लिए शोध कर्ता जनसंख्या में से कुछ अंश चुन लेता है जिसमें

सम्पूर्ण जनसंख्या की विशेषता होती है। सम्पूर्ण जनसंख्यामे से लिये गये अंश को ही प्रतिदर्शन कहते है।

करलिंगर के अनुसार[3]–

प्रतिदर्शन समग्र जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाले अंशो का चयन है।

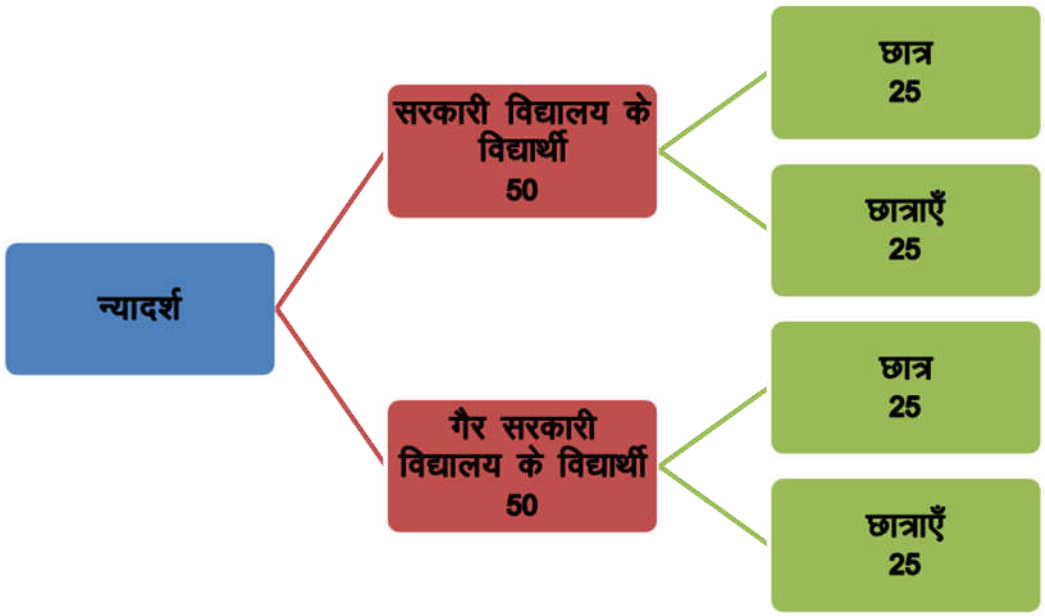

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में अप्रमापीकृत स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग नैतिक, धार्मिक, सामाजिक मूल्यों की प्रभावशीलता को जानने के लिए किया गया है।

सांख्यकी

[3] शर्मा, आर. ए., चतुर्वेदी शिखा (2013) : "शिक्षा मनोविज्ञान के मूल तत्व" पृष्ठ संख्या 701.

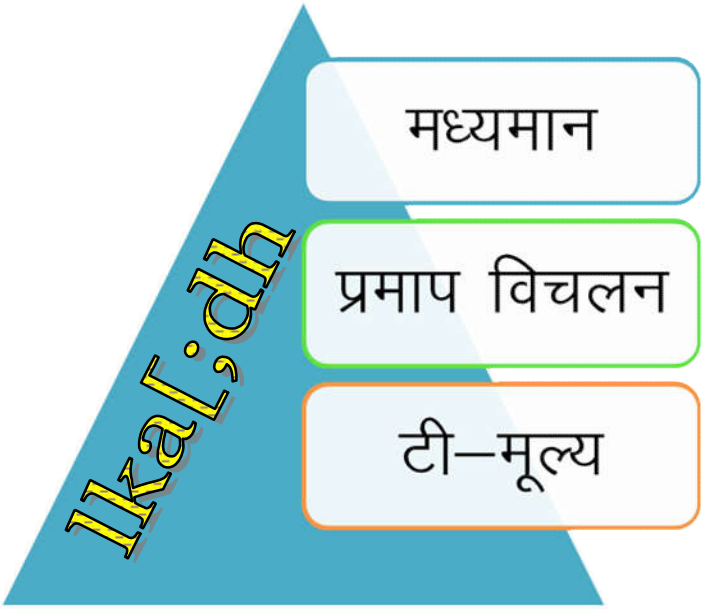

परिकल्पनाओं के आधार पर निष्कर्षः–

परिकल्पना – 1 माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यों पर टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का प्रभाव पडता है।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जाता है कि माध्यमिक स्तर पर सरकारी विद्यालय व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यों पर टेलीविजन कार्यक्रमों की प्रभाव पड़ता है। इसका कारण हो सकता है कि दोनों को वातावरण भिन्न–भिन्न हो।

परिकल्पना – 2 माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर नैतिकता से जुडें टेलीविजन कार्यक्रमों का प्रभाव नहीं पड़ता।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जाता है कि माध्यमिक स्तर पर सरकारी विद्यालय व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर टेलीविजन कार्यक्रमों में (नैतिकता से जुड़े) कार्यक्रमों का प्रभाव पडता है इसका कारण हो सकता है कि टेलीविजन पर जिस तरह के कार्यक्रम देखते है उन कार्यक्रमो के चुनावों में उनके पारिवारीक वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है।

परिकल्पना – 3 माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों पर सामाजिकता से जुडे टेलीविजन कार्यक्रमों का प्रभाव नहीं पड़ता।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जाता है कि माध्यमिक स्तर पर सरकारी विद्यालय व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों पर टेलीविजन कार्यक्रमों का प्रभाव नहीं है शायद इसका कारण समान आयु वर्ग के होने के कारण समान मूल्य ग्रहण करते है।

परिकल्पना – 4 माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों पर धार्मिक टेलीविजन कार्यक्रमो का प्रभाव नही पड़ता।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जाता है माध्यमिक स्तर पर सरकारी विद्यालय व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों पर टेलीविजन कार्यक्रमों प्रभाव नहीं है शायद इसका कारण हो सकता है किशोरावस्था में बहुत कम समय विद्यार्थी धार्मिक कार्यक्रमों को देते है जो समान रूप से प्रभावित करते है।

परिकल्पना – 5 माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयो के विद्यार्थियों के मूल्यों पर टेलीविजन कार्यक्रमों का प्रभाव नहीं पडता है।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जाता है कि माध्यमिक स्तर पर सरकारी विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों पर टेलीविजन कार्यक्रमों के प्रभाव में अंतर होता है शायद इसका कारण हो सकता है कि छात्र व छात्राओं के कार्यक्रम के चुनाव में अंतर हो।

परिकल्पना – 6 माध्यमिक स्तर के गैर सरकारी विद्यालयो के अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों पर टेलीविजन कार्यक्रमों का प्रभाव नहीं पड़ता।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जाता है कि माध्यमिक स्तर पर गैर सरकारी विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों पर टेलीविजन कार्यक्रमों के प्रभाव में अंतर नहीं होता हो सकता है शायद इसका कारण छात्र व छात्राओं का समान आर्थिक स्तर, समान वातावरण जिसके कारण उच्च कोटी के ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद कार्यक्रम

देखना पसन्द करते है जिसका प्रभाव उनके मूल्यों पर सकारात्मक रूप से पड़ता है।

शैक्षिक निहितार्थ :–

समग्र दृष्टि से शोधकर्त्री ने सुझावों को महत्वपूर्ण क्षेत्रों में विभक्त किया है –

(1) नीति–निर्माताओं के लिए –

नीति–निर्माताओं को चाहिए कि वो टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के प्रसारण से पूर्व पूरी जाँच करें जो कि उनमें दिखाई जाने वाले पटकथा, पात्रों, दृश्यों में ऐसे तथ्यों को न दिखाया गया हो जो कि हमारी सांस्कृतिक व सामाजिक मूल्यों को गलत ढंग से पेश कर रहे हो।

ऐसे कार्यक्रमों के प्रसार की अनुमति न दे जिनमें अश्लीलता, हिंसा, आक्रामकता का अत्यधिक प्रयोग किया गया हो तथा ऐसे चैनल पर प्रतिबन्ध लगाए जो कि इस तरह के कार्यक्रमों का प्रसारण करते है।

निर्माताओं को ऐसे कार्यक्रमों का निर्माण करना चाहिए जो सामाजिकता चेतना, जागरूकता व हमारी मानसिकता को विस्तृत करने में महत्ती भूमिका निभा सकते हो। अतः ऐसे सामाजिक कार्यक्रमों के द्वारा विद्यार्थियों को समाज से जोड़ा जा सकता है तथा उनके जीवन मूल्यों को उच्च बनाया जा सकता है।

शिक्षकों के लिए सुझाव –

प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों के आधार पर शिक्षक बालकों को ऐसे कार्यक्रम देखने के लिए प्रोत्साहित करे जो विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्यों को श्रेष्ठ बनाने की दृष्टि से उपयोगी हो। टी.वी. के बहुत से कार्यक्रम जनमत निर्माण के सशक्त साधन है। अध्यापक टेलीविजन पर प्रसारित की गई सूचनाओं, जानकारियों, कहानियों, कविताओं में दी गई शिक्षा को अपने शिक्षण से जोड़ सकते हैं तथा अपने शिक्षण को प्रभावी बना सकते है तथा सहायक सामग्री के रूप में उपयोग कर सकते है।

दूरदर्शन के विभिन्न नेटवर्क पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसारण विद्यालय परिसर में करवाकर विद्यार्थियों के ज्ञान व सूचना के क्षेत्र को व्यापक बनाया जाये।

अभिभावकों के लिए के लिए सुझाव –

बालकों का सबसे अधिक समय अपने अभिभावकों के बीच ही गुजरता है और ये ही बालकों के सबसे अधिक नजदीक होते है। अतः अभिभावकों को चाहिए कि वो बालकों की टी.वी. देखने की समय सीमा निर्धारित करे। अभिभावक बालकों को ऐसे पारिवारिक धारावाहिकों को देखने के लिए प्रोत्साहित करेजिनके माध्यम से बालकों में परिवार के प्रति आदर एवं सम्मान के मूल्य विकसित करवाये जा सके। टी.वी. धार्मिक, अंधविश्वासों को दूर करने का सबसे सशक्त माध्यम है। अभिभावक बच्चों को पौराणिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक कार्यक्रम देखने के लिए प्रेरित करें जिससे उनमें बड़ों के प्रति सम्मान, न्याय व सत्य बोलने जैसी उदात्त भावनायें जाग्रत हो सके और जीवन मूल्य उच्च हो सके। टी.वी. कार्यक्रमों के द्वारा बालकों में राष्ट्र प्रेम व देशभक्ति जैसे राष्ट्रीय मूल्यों का विकास करवाया जा सकता है।

भावी शोध हेतु सुझाव

प्रस्तुत शोध कार्य के संबंध मं आगामी अध्ययन हेतु निम्न सुझााव दिये जा सकते है–

1. प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर टेलीविजन कार्यक्रमों से पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन कर सकते है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों पर टेलीविजन कार्यक्रमों से पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन कर सकते है।
3. टेलीविजन कार्यक्रमों के विद्यार्थियों के मानसिकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन कर सकते है।
4. टेलीविजन कार्यक्रमों से विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण व सामाजिक समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन कर सकते है।
5. टेलीविजन कार्यक्रमों को देखने का कितना समय विद्यार्थियों को देना चाहिए। इस पर अध्ययन कर सकते है।
6. टेलीविजन कार्यक्रमों का विभिन्न आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन कर सकते है।

7. टेलीविजन कार्यक्रमों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन कर सकते है।
8. विद्यालय पूर्व के बालकों की भाषा शब्दावली एवं मानसिकता पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन कर सकते है।
9. टेलीविजन कार्यक्रमों का उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन कर सकते है।
10. टेलीविजन कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का अध्ययन ग्रामीण एवं शहरी स्तर पर भी कर सकते है।

प्रस्तुत शोध के परिणामों को अन्तिम सत्य नहीं माना जाए, इस क्षेत्र में शोध करने के लिए शोध प्रबन्धन सम्बन्धित साहित्य का कार्य भी किया जा सकता है, जिससे इस क्षेत्र में अधिक विस्तृत, गहन एवं वस्तुनिष्ठ निष्कर्षों को उठाया जा सके। शोधकर्त्री यह आशा व्यक्त करती है कि यदि यह लघु शोध प्रबन्ध आगे अन्य अनुसन्धानकर्त्ताओं को अध्ययन हेतु प्रेरित कर शिक्षा जगत को लाभान्वित कर सके तो वह अपने प्रयास को सफल एवं सार्थक मानेगी।

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है टेलीविजन के कार्यक्रमों के प्रभाव के फलस्वरूप माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में मूल्य उपयुक्त मात्रा में पाये गये। परन्तु नैतिक मूल्यों मे सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में अन्तर पाया गया। विद्यार्थियों के मूल्यों को उच्च बनाने के लिए टी.वी. प्रसारित श्रेष्ठ कार्यक्रमों को देखने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। अभिभावक एवं शिक्षक उन कार्यक्रमों को देखने के लिए प्रेरित करे, जो उनके जीवन मे उपयोगी हो उनके मूल्यों को उत्कर्ष बनाये। टेलीविजन कार्यक्रम निर्माता अध्यापकों की सहायता से विद्यार्थियों के शैक्षिक सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक, मानसिक आदि पक्षों को प्रभावित करने वाले कार्यक्रमों का निर्माण कर सकते है।